# कथाओं के देश में

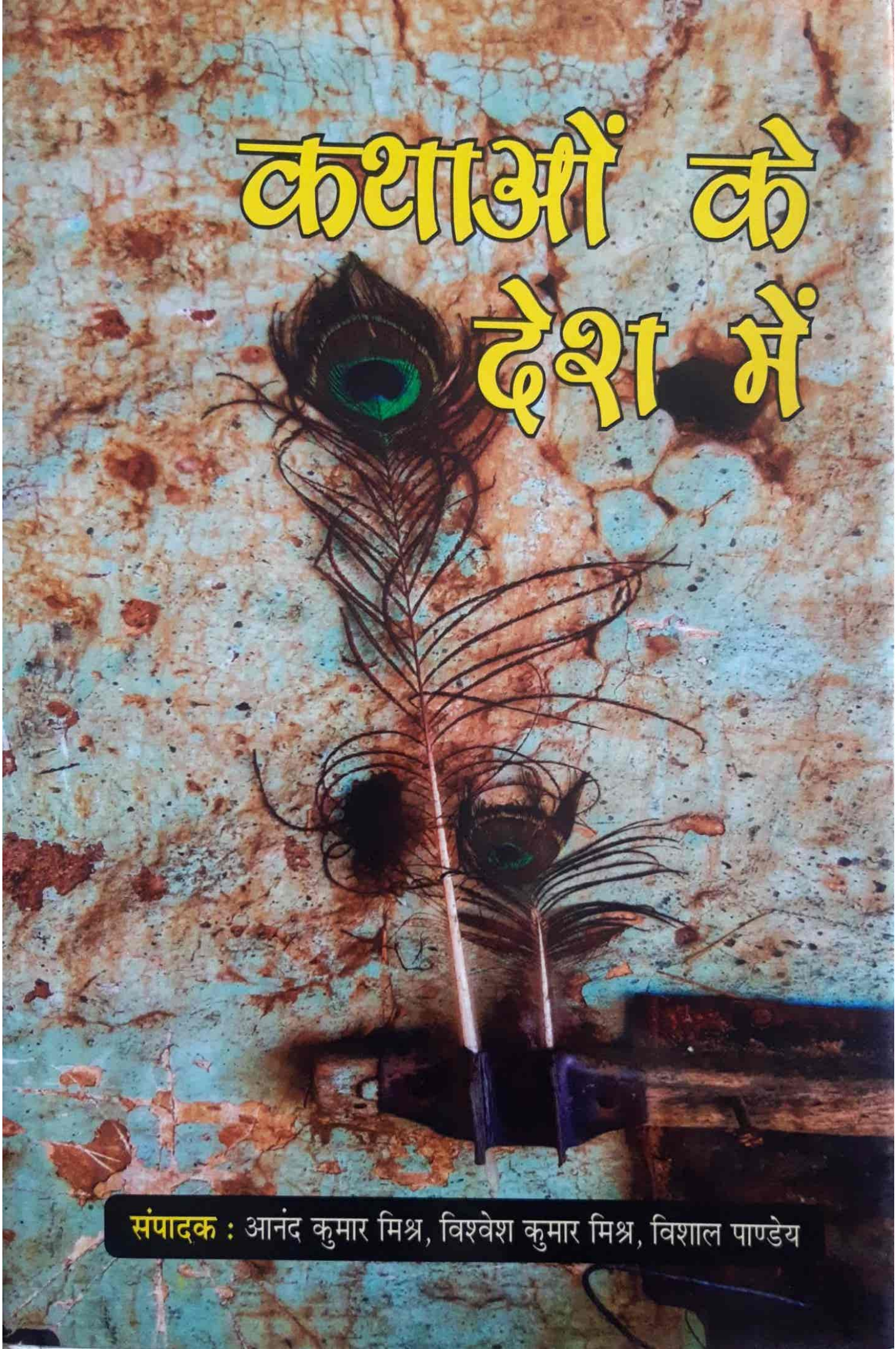

संपादक : आनंद कुमार मिश्र, विश्वेश कुमार मिश्र, विशाल पाण्डेय

**ISBN : 978-93-87941-85-4**

| | | |
|---|---|---|
| **पुस्तक** | : | **कथाओं के देश में** |
| **संपादक** | : | आनंद कुमार मिश्र, विश्वेश कुमार मिश्र, विशाल पाण्डेय |
| **प्रकाशक** | : | **माया प्रकाशन**<br>6ए/540, आवास विकास हंसपुरम्, कानपुर-208021<br>मो. : 9451877266, 7618879266, 6393609403<br>Email - mayaprakashankanpur@gmail.com<br>website : mayaprakashan.com |
| **संस्करण** | : | **प्रथम, 2021** |
| **शब्द-सज्जा** | : | रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर |
| **आवरण** | : | श्री कपिल जोशी |
| **मूल्य** | : | 525.00 (पाँच सौ पच्चीस रुपये मात्र) |
| **मुद्रण** | : | श्री पूजा प्रेस, कानपुर |
| **जिल्दसाज** | : | तबारक अली, कानपुर |

# विषय सूची


1. अस्थिफूल उपन्यास की अंतर्वस्तु में निहित स्वप्न और यथार्थ का विश्लेषण
**डॉ. अर्चना त्रिपाठी** 17

2. उषा यादव कृत 'उसके हिस्से की धूप' : बाल-अधिकारों का शंखनाद
**डॉ. कामना सिंह** 24

3. एस.आर. हरनोट का हिडिम्ब उपन्यास : दलित जीवन संघर्ष व चेतना का यथार्थ दस्तावेज
**डॉ. प्रीती सिंह** 34

4. भीष्म साहनी की कहानियों में सामाजिक प्रतिबद्धता
**डॉ. दीपेन्द्रसिंह जाडेजा** 40

5. धर्म और संस्कृति की दास्तान : सेज पर संस्कृत
**प्रो. शिव प्रसाद शुक्ल** 43

6. कथा-साहित्य के फलक को व्यापक करता 'कहानी का रंगमंच'
**डॉ. अल्पना त्रिपाठी** 54

7. प्रकोप का समय और समय का प्रकोप
**अम्बरीश त्रिपाठी** 67

8. डॉ. राज बुद्धिराजा : भारत-जापान की सांस्कृतिक सेतु
**शशिप्रभा तिवारी** 72

9. मेरे हिस्से की धूप : मानवतावादी दृष्टि
**डॉ. सुधांशु कुमार शुक्ला** 78

10. इक्कीसवीं सदी में 'तमस'
**डॉ. शिप्रा शर्मा** 84

11. 'कठगुलाब' उपन्यास में चित्रित स्त्री संघर्ष
**दीपिका सिंह** 94

12. यथार्थ की कठोर धरती का जीवन : 'कोहबर की शर्त'
**विशाल पाण्डेय** 98

13. हजारों हजार कहानियों की एक कहानी - उसने कहा था
**सौरभ पारीक** 102

14. 'किन्नर कथा' में अभिव्यक्त मानवीय संवेदनाओं का यथार्थ चित्रण
**प्रिया सिंह** 109

# 3

# एस.आर. हरनोट का 'हिडिम्ब' उपन्यास : दलित जीवन संघर्ष व चेतना का यथार्थ दस्तावेज

डॉ. प्रीती सिंह

बदलते समय के साथ साथ सारी दुनिया वैश्विक ग्राम बनने जा रही है। यह विश्व ग्राम उत्तर आधुनिक और भूमंडलीय संस्कृति में उपनिवेशवादी प्रवृत्ति की ओर खींचा जाना अनेक खतरों के इशारा है। जल, जंगल, पहाड़, जमीन, पर्यावरण के आधार उद्योग के कारण फैक्ट्रियों, कारखानों, सड़कों, शहरों के लिए नष्ट किए जा रहे है, जिनसे अनेक समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। प्रकृति का दोहन तेजी से हो रहा है। अब औद्योगिकीकरण की लहर शहरों से ग्रामीण क्षेत्र की ओर भी आ रही है। ग्रामीण समाज भी इससे विक्षिप्त हुआ है। वैश्विक संकट आज उनके सामने चुनौती बन कर उभर रहा है। ग्रामीण जीवन इससे चिंतित भी है। औद्योगिकीकरण के लिए किसानों की जमीनें छीनी जा रही हैं। देश की सीमा पर ही नहीं गांव की भूमि पर भी हड़प नीति का घना खतरा मंडरा रहा है। वैश्वीकरण और उदारीकरण के जमाने में पहाड़ों की जमीनें और खेत बेभाव बढ़ चढ़ कर बिक रहे हैं। इक्कीसवीं सदी में जल, जंगल, जमीन, पहाड़ को उजाड़ कर उद्योगीकरण स्थापित किया जा रहा है, उसे रोकने की आवश्यकता है। जिसके कारण वहां रहने वाले ग्रामीण वासियों का निरंतर शोषण हो रहा है।

इस उत्तर–आधुनिकता समय में जब जल, जंगल, पहाड़, संस्कृति एवं परम्पराओं की चिंताएं हाशिये पर चली जा रही है। उस समय एस. आर.हरनोट द्वारा रचित 'हिडिम्ब' उपन्यास को पढ़ने की आवश्यकता है। ग्रामीण पहाड़ी क्षेत्र के विश्रृंखलित होते जन–जीवन की त्रासदी 'हिडिम्ब' उपन्यास की केंद्रीय संकल्पना है। "वैश्वीकरण के और उदारीकरण की बयार में भारतीय सभ्यता और संस्कृति संकट के नए दौर में है। यह संकट वैश्विक ग्राम में अपने गांव के खो जाने का है।"[1]

लेकिन एस. आर.हरनोट ने हिमाचल के दुर्गम पहाड़ी ग्रामीण क्षेत्र की कथा को अपने हिडिम्ब उपन्यास में समेटकर वैश्विक सरोकार को पकड़ने की कोशिश की है। हरनोट हिमाचल प्रदेश शिमला के निवासी हैं। इनके साहित्य में हिमाचली परिवेश व संस्कृति की अभिव्यक्ति परिलक्षित होती है। हरनोट अपने जीवन के